- **वर्णो के उच्चारणस्थान ।**

@अ-कु-ह-विसर्जनीयानां कण्ठ: ।
-अकार, कवर्ग (क, ख, ग, घ, ङ्), हकार और विसर्जनीय का उच्चारण स्थान " कण्ठ " है ।

@इ-चु-य-शानां तालु ।
-इकार, चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ), यकार और शकार इनका " तालु " उच्चारण स्थान है ।

@ऋ-टु-र-षाणां मूर्धा ।
-ऋकार, टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण), रेफ और षकार इनका " मूर्धा " उच्चारण स्थान है ।

@लृ-तु-ल-सानां दन्ता: ।
-लृकार, तवर्ग (त, थ, द, ध, न), लकार और सकार इनका उच्चारण स्थान " दन्त " है ।

@उ-पु-उपध्मानीयानाम् ओष्ठौ ।
-उकार, पवर्ग (प, फ, ब, भ, म) और उपध्मानीय इनका उच्चारण स्थान " ओष्ठ " है ।

@ञ-म-ङ-ण-नानां नासिका च ।
-ञकार-मकार-ङकार-णकार-नकार इनका उच्चारण स्थान " नासिका " है ।

@ऐदैतौ कण्ठ-तालु ।
-ए और ऐ का उच्चारण स्थान " कण्ठ-तालु " है ।

@ओदौतौ कण्ठोष्ठम् ।
-ओ और औ का उच्चारण स्थान " कण्ठ-ओष्ठ " है ।

@' व ' कारस्य दन्तोष्ठम् ।
-वकार का उच्चारण स्थान "दन्त-ओष्ठ " है ।

@जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् ।
-जिह्वामूलीय का उच्चारण स्थान " जिह्वामूल " है ।

@अनुस्वारस्य नासिका ।
-अनुस्वार का उच्चारण स्थान " नासिका " है ।

@क, ख इति क-खाभ्यां प्राग् अर्ध-विसर्गसदृशो जिह्वा-मूलीयः।
-क, ख से पूर्व अर्ध विसर्ग सदृश " जिह्वामूलीय " कहलाते है।

@प, फ इति प-फाभ्यां प्राग् अर्ध-विसर्ग-सदृश उपध्मानीयः।
-प, फ के आगे पूर्व अर्ध विसर्ग सद्दश " उपध्मानीय " कहलाते है।

@अं , अः इति अच् परौ अनुस्वार-विसर्गौ।
-अनुस्वार और विसर्ग " अच् " से परे होते है; जैसे — अं , अः।